प्राक्कथन

आज उपन्यास, साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में सर्वाधिक लोकप्रिय हो चुका है। यह मानव समाज के वास्तविक जीवन का संस्पर्श कर ऊच्च जीवनादर्श एवं मानविक जीवनानुभूतियों को व्यक्त करता हुआ मानवीय संवेदना के अनेकानेक अंगों-अंगों को सम्प्रेषित करने का सफलतम माध्यम माना जा चुका है। साहित्यकार युग-चेतना से प्रभावित रहता है। उसकी रचना युग की परिस्थितियों से प्रभावित रहती है। विशेषतः उपन्यासकार जीवन व जगत के अधिक समीप होता है, क्योंकि जब तक वह जीवन के संघर्ष और सत्यों से नहीं गुजरता तब तक उपन्यास की रचना नहीं कर सकता।

तात्पर्य यह है कि हर युग में उपन्यासकार युगीन चेतना की ज्ञातज्ञता से प्रभावित होता है और फिर जीवन की जो तस्वीर उभरती है वह अधिक यथार्थीय और विश्वसनीय होती है। रेल्फ कोफ्स के अनुसार उपन्यास केवल कथात्मक गधी नहीं है, वह मानव के संघर्षमय ज्वलन्त जीवन का गधात्मक महाकाव्य है। वह ऐसी पहली कला है जो सम्पूर्ण मानव जीवन को लेकर उसे अभिव्यक्ति प्रदान करने की चेष्टा करती है।

स्वतंत्रता के बाद निर्मित साहित्य पर दृष्टिकोण डालने से, यह दिखाई देता है कि यहाँ स्री समस्याओं के प्रति जागृत दृष्टिकोण रखकर स्रियों की स्थिति में सुधार लाने के लिए प्रयास उभरकर आते हैं। साहित्य के क्षेत्र में नारी हर युग में उपस्थित रही है। उसकी उपस्थिति हमेशा पुरुषों के द्वारा और पुरुषों के लिए ही रही है। सुधारवादी दृष्टि से उपस्थित नारी ‘ऑकेल में धूध और ‘ऑकेल में पानी’ लिखे कथात्मक पथ पर अभिव्यक्ति होने पर विवश होती रही। अपनी ‘विवशता’ का उदालकरण करती रही। सब कुछ एक कठिनता की तरह। नवम दशक तक आते आते यह स्थिति बदलने लगी। महिला लेखिकाओं ने अपने आपको देखना आरंभ किया। सत्यविद्ध के बजाए गहरे यथार्थ को आंकना शुरू किया। साहित्य-भूमिने के साथ ही साहित्यालोचन में भी ‘स्री-दृष्टि’ की सार्थकता महसूस होने लगी और ‘स्री विश्वास’ की परिधि विस्तृत होने लगी।
आर्थिक, सामाजिक, राजकीय, औपचारिक, शैक्षणिक स्थितियों के कारण अधुनातन युग में मानव-मानव की, सी-पुरुष की बनती बिगड़ती संवेदनात्मक स्थितियों का चित्रण नवम् दशक के उपन्यासों में विशिष्ट रूप से प्रस्तुत करने का यतन तद्युगीन लेखिकाओं ने किया है। नारी की क्षमताओं, विशेषताओं एवं नारी विवर्ण के फलस्वरूप आज नारी को संवैधानिक दृष्टि से पुरुष के बराबर समान अधिकार मिले। सांप्रद समय में नारी सार्वजनिक क्षेत्रों में अग्रसर हो गयी।

प्रस्तुत शोध प्रवन्ध का विषय अपने आप में कोई नया नहीं है किन्तु इसके अंतर्गत जो मूल हेतु खोजने का मेरा प्रयास है वह मौलिक है। मैंने नवम् दशक के प्रमुख हिन्दी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी-जागरण विषय को लेकर नासिर शर्मा, ममता कालिया, छिद्रानी, मंजु भगत, मदुला गर्म, मालती जोशी एवं शुभा वर्मा के महत्वपूर्ण उपन्यासों को शोध-कार्य में विशेषकर किया है। मैंने इस शोध-प्रवन्ध में नारी जीवन संबंधी विभिन्न समस्याओं को, अलग-अलग स्थिति को केंद्र में रखा है। नवम् दशक के नारी पात्र के क्रियाकलाप, वैचारिकता आदि को देखते हुए समाज में नारी का भविष्य क्या हो सकता है? इस बात को समय ही स्पष्ट करेगा।

शोध-कार्य की प्रेरक भावभूमि एवं विषय-चयन:

किसी भी शोध-कार्य की प्रेरक भावभूमि के मूल में मनुथ्य की जिज्ञासा दृढ़ता होती है। संसार की प्रत्येक चीज वस्तुओं के प्रति अजीब-सी जिज्ञासा निहित है। साहित्य में शोध-कार्य के पीछे यहीं जिज्ञासा कुछ नया देखने की सोच जिम्मेदार है। जान-पिपासु के लिए स्थान की कोई सीमा नहीं है। मेरे अनुसंधित सूची की भूमिका के पीछे यहीं जिज्ञासावृत्ति कारण सूची है।

हिन्दी भाषा के साथ मेरा रिश्ता प्राथमिक स्कूल जीवन से बना हुआ है। प्राथमिक कक्षा से ही मुझे छोटी-छोटी कहानी एवं उपन्यास साहित्य को पढ़ने में अत्यंत भूमिका है। आगे चलकर बारहवीं कक्षा में मैंने हिन्दी विषय में ही ज्ञानांक प्राप्त किये थे। हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति विशेष लगाय होने के कारण मैंने हिन्दी विषय के
साथ एम.ए. तथा एम.फिल. किया। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में पढ़ते समय उपन्यासों के प्रति मेरा लगाव और भी बढ़ता रहा।

मुझे कथा-साहित्य के अध्ययन एवं अध्यापन में विशेष रूचि है। अतः मैंने मन ही मन आधुनिक गर्व-साहित्य पर कार्य करने का निष्ठाकृति कर लिया। कथा-साहित्य पर शोध के विषय के लिए डॉ. एस. पी. शर्मा (पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट) के साथ चरचा हुई। डॉ. बी. के. कलासवाय, अध्यक्ष, हिन्दी भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, इस सिलसिले में डॉ. गिरीश त्रिवेदी, डॉ. शैलेष मेहता, डॉ. एन. टी. गामिन आदि विद्वानों से विषय संबंधी चरचा का दौर चला। अंत में मैंने तीन विषयों का गुरुजंतु के सम्मुख रखा जो समकालीन समय के साथ चल रहे हैं।

1. ग्रामीण-विविधता
2. दलित-विविधता
3. स्त्री-विविधता

आदरणिय गुरु डॉ. के. जी. जोशी साहब के साथ विचार-विमर्श के बाद स्त्री विषयक पर्याय विषय को स्वीकृति मिल गई। शोध-कार्य का शीर्षक तय हुआ - “नवम् दशक के प्रमुख हिन्दी महिला उपन्यासकार के उपन्यासों में नारी-जागरण।”

डॉ. के. जी. जोशी साहब ने मुझे शोध-छात्र के रूप में स्वीकार कर उपकृत किया। ऐसे निर्देशक की छत्रछाया में इस शोध-विषय को पूर्ण न्याय देने का मैंने अत्यंत परिश्रमपूर्ण यत्न किया है।

शोध-कार्य की उपादेयता एवं प्रासंगिकता:

नारी प्रकृति का सुंदरतम उपहार है और वह समाज संस्कृति और साहित्य का महत्वपूर्ण अंग हैं, लेकिन पुरूषप्रधान व्यवस्था में नारी को सदैव भोगवस्तु माना गया है। भारतीय नारी के बारे में अनेक विद्वानों ने अपना-अपना मत प्रदर्शित किया है। गुस जी ने कहा है -

"अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में हे दूध और आँखों में पानी।'

पुरुष की तुलना में नारी अधिक मानवीय हैं, फिर भी मानव संस्कृति के निर्माण में उसको अधिक महत्व नहीं मिला। मानव संस्कृति के बीतर दो उप-संस्कृतियाँ होती हैं - पुरुष उपसंस्कृति और नारी उपसंस्कृति। दोनों के सही सम्मिलित रूप से मानव संस्कृति बनती है। यहूदी की अपनी एक विशिष्ट पहचान होती है, जिसे मान्यता मिलता आवश्यक है। प्रतिभा की समानता और शोषण से मुक्त ही नारी को नारित्व प्रदान करेगी। नारी पुरुष-सत्ता का विकल्प नहीं, बल्कि एक साझा संस्कृति चाहती है। इसी चाहत ने 'नारी जागरण' की उद्देश्य को विकसित किया।

समकालीन हिंदी उपन्यास में नारीशक्ति को प्रमुख रूप से उभारा गया है। समकालीन लेखिकाओं द्वारा हिंदी उपन्यास में चित्रित नारी का एक विशिष्ट मूल्यांकन मेरे शोध-प्रवर्तन की विशेषता है। मेरा यह शोध-कार्य अंतिम नहीं है, परंतु इतना अवश्य कहूँगा कि मेरा यह शोध-प्रवर्तन मेरे सहयोगियों एवं भविष्य के अन्य शोध-कर्ताओं के लिए कुछ सीमा तक प्रेरणादायी अवश्य बनेगा। इस दृष्टि से इसकी उपादेयता और प्रासंगिकता सिद्ध होगी।

प्रबन्ध परिचय:

इस शोधप्रबंध को कुल पाँच अध्यायों में रखकर अध्ययन प्रस्तुत किया है, जिसका विवरण निम्नानुसार है:

प्रथम अध्याय: हिंदी उपन्यास: उद्भव एवं विकास

आधुनिक हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा मानवीय जीवन और समाज जीवन का चित्रण करने वाली विधा है। प्रथम अध्याय के अंतर्गत उपन्यास शब्द, हिंदी उपन्यास व्युत्पत्ति, उपन्यास की परिभाषा, उपन्यास के तत्त्व और हिंदी उपन्यास की विकास-यात्रा के संबंध में विशद विवेचन किया गया है।
हमारे यहाँ उपन्यास संजा का प्रचलन अंग्रेजी नॉवेल के पर्याय के रूप में 
उन्नीसवीं सदी में हुआ। जहाँ तक कथा लेखन की बात है, भारत की कथा परंपरा विश्व 
की प्राचीनतम कथा परंपराओं में से एक है।

उपन्यास शब्द को अंग्रेजी में ‘Novel’, गुजराती में ‘नवलकथा’ तथा भारती में 
‘कादम्बरी’ कहा जाता है। उपन्यास शब्द संस्कृत के ‘अस’ धातु से उत्पन्न हुआ है 
जिसका अर्थ है रचना। उपन्यास शब्द ‘उपन्यास’ से बना है। उप का अर्थ होता है 
पास में, निकटता तथा नजदीक में तथा ‘न्याय’ का अर्थ है ‘सुशोभित करना’ या सजाना।

उप संस्कृत का उपसर्ग है, जो शब्दों के पूर्ण आकार, समीपता या पास का योग्य है।

‘न्याय’ शब्द ‘नि’ पूर्वबंधक अस धातु में धम प्रत्यय हुआ है। ‘नि’ भी संस्कृत का उपसर्ग 
है। उपन्यास की संजा ऐसी रचना को दी जा सकती है जिसे पढ़कर अपने जीवन की 
वास्तविक यथार्थवादी प्रक्रियों का आभास हो और निकटता की अभिव्यक्ति हो।

उपन्यास की परिभाषा कितिपय साहित्यकारों ने इस प्रकार दी है:

प्रेमचन्द के मतानुसार – “मैं उपन्यास को मानव चरित्र को चित्र मात्र समझता 
हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल 
तत्त्व है।”

बाबू गुलाबराय के शब्दों में – “उपन्यास कार्यकारण श्रृंखला में बैठा हुआ यह गध 
कथानक है जिसमें आपेक्षा कृत अभिभ किस्तार के साथ वास्तविक या काल्पनिक 
घटनाओं के द्वारा मानव जीवन के सत्य का रसात्मक रूप से उदाहरण किया जाता है।

डॉ. एम. फोस्टर का कहना है – “उपन्यास का आकार पचाश दास में नहीं बना होना चाहिए।”

द्वितीय अध्याय : नारी-जागरण और हिन्दी उपन्यास

नारी समग्र सृष्टि की सुजनानतिमिका शक्ति है किन्तु वह सदियों से दंगत रही है।
कालक्रम में इसमें जागरण और सीमन बुवर जैसी महिला चित्रकारों के कारण नारी- 
जागरण के आंदोलन का प्रारंभ हुआ। हिन्दी उपन्यास साहित्य भी इससे अछूतान न रहा।
अतः हिंदी उपन्यासों में नारी चेतना का आविर्भाव हुआ। इस अध्याय में हिंदी उपन्यासों के अंतर्गत नारी जागरण एवं नारीचेतना से संबंधित विचार एवं चित्रन प्रस्तुत किए गए हैं।

तृतीय अध्याय: नवम् दशक के प्रमुख महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का परिचयात्मक अध्याय

समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी-जागरण पर विचार करने से पूर्व यह जरूरी है कि नवम् दशक के प्रमुख महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का परिचय प्राप्त किया गया, क्योंकि इससे नवम् दशक में नारी जागरण विषय पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है। अतः इस अध्याय में नवम् दशक के प्रमुख महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का परिचय दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय: नवम् दशक के प्रमुख महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी-जागरण का चित्रण

नवम् दशक के प्रमुख महिला हिंदी उपन्यासकारों के उपन्यासों की अनेक प्रवृत्तियों एवं विषयों की विशेषताओं में से नारी-जागरण संबंधित उपन्यासों के संबंध में एवं उपन्यासों में नारी-जागरण संबंधित विचारों एवं चित्रन पर अध्याय में चर्चा की गई है।

पंचम अध्याय: नवम् दशक प्रमुख महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी-जागरण: समग्र मूल्यांकन

नवम् दशक के प्रमुख महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी जागरण प्रमुख जागरण है। इस आलोच्य अध्याय में नारी-जागरण के साथ-साथ राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व को प्रस्तुत किया गया है। अतः इस अध्याय में आलोच्य विषय का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

उपसंहार
समग्र शोध-प्रबंध के निष्कर्ष रूप विचारों एवं स्थापनाओं का इस अंतिम अध्याय में विवेचन प्रस्तुत किया गया है। उपसंहार के रूप में निष्कर्ष प्रस्तुत कर वर्तमान एवं भविष्य संभावनाओं पर चर्चा की गई है।

कृतज्ञता-जापन
किसी के प्रति आभार या कृतज्ञता के भाव व्यक्त करना मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। आभार एक प्रकार से अनुभूति का विषय है, अभिव्यक्ति का नहीं, कितनु कभी-कभी अभिव्यक्ति भी अनुभूति को निरंतर ताजगी ही दी है। कृतज्ञता-जापन को नजर-अंदाज नहीं किया जा सकता।

सर्व प्रथम में अपने श्रद्धाय गुरु-मार्गदर्शक डॉ. के. जी. जोशी साहब (विभागाध्यक्ष, श्री एस. एम. जाडेजा आट्स कोमर्स कॉलेज, कुटियाणा) के प्रति आभार प्रगट करते हुए उनके चरणों में वंदना के फूल अपण करता हूँ। उनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम और मार्गदर्शन के फलस्वरूप ही मैं इस शोधकार्य को पूर्ण कर पाया हूँ।

अनुसंधान-कार्य सम्पन्न होने तक जिनके मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन मिलते रहे ऐसे परम श्रद्धाय आदरणीय डॉ. एस. पी. शर्मा साहब (पूर्व अध्यक्ष हिन्दी भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट), आदरणीय डॉ. बी. के. कलासवा (अध्यक्ष, हिन्दी भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट), डॉ. गिरीशभाई ट्रिवेदी साहव (पूर्व प्रोफेसर, हिन्दी भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट), डॉ. शैलेशभाई महेता (रीडर, हिन्दी भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट), डॉ. एन. टी. गामित (रीडर, हिन्दी भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट), डॉ. जिलेश व्यास, डॉ. कमलेश देसाई, डॉ. दक्षाबहन जोशी, भरतभाई केशवाला, डॉ. एन.पी.ओडेदरा, बी.एस.एम.जाडेजा कॉलेज परिवार, डॉ. पी. एस. ओडेदरा, आदि विद्वान
विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं | विषय-चयन से लेकर शोध कार्य सम्पन्न होने तक सहयोग प्राप्त हेतु हम उनके आभारी हैं।

इस शोधकार्य में सबसे महत्वपूर्ण योगदान मेरे माता-पिता के चरणों में मेरे शत-शत प्रमाण। मेरे बड़े भाई निलेशभाई एवं भाभी ने हर समय शोध-कार्य पूर्ण करने में मदद की। शोध कार्य के पंजीकरण से लेकर शोध-कार्य पूर्ण होने तक मेरी धर्मपती मीना का पूर्ण सहयोग रहा। बेटी पूवी के बाल सुलभ सहयोग के कारण मुझे शोध-कार्य सरल लगा।

इस अध्ययन के लिए अनेक गंभीर एवं ग्रंथालयों - सौराष्ट्र युनिवर्सिटी ग्रंथालय, गूजरात विश्वविद्यालय, एस.एम.जे.कोलेज ग्रंथालय, कूंटियाणा, डॉ. री. के. कलासवार होम लायब्रेरी की सहायता ली गई है, उन सभी ग्रंथकारों का मेरे प्रति अत्यंत आभारी हूँ। एकबार पून: अध्ययन के दौरान विभिन्न भाषाओं के विद्वानों से इस विषय की चर्चा का मौका मिला है उनके प्रति अत्यंत आभारी हूँ। भाषाध्यक्ष हेतु अपनी सक्रिय भूमिका निभानेवाले भरत वेशवाला का भी आभार मानता हूँ। पुस्तक के संदर्भ, तुमिरुहल मुद्रण हेतु श्री कपले क्वायस (हैपी ग्राफिक्स, अहमदाबाद) को ध्यानदायी देता हूँ।

साथ ही प्रकाशक, विद्वानों एवं मित्रों - लाखनशि, खिमानटड, बंगावलणि, लक्ष्मण, लखन, संजय आदि का इस कार्य में हर समय सहयोग मिलता रहा। तदुपरांत जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस शोधकार्य को सम्पन्न कराने एवं मुझे सहायता प्रदान की है उन सबका भी मैं आभारी हूँ।

मेरे इस अध्ययन की कुछ नयांदाएँ हो सकती हैं परन्तु अधिकांश सामग्री हिन्दी में प्रथम बार आ रही है। मुझे आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि इसकी कुछ न कुछ उपादेयता अवश्य सिद्ध होगी।

अस्तु,

विनिमेय

स्थान - राजकोट
दिनांक - (ओडेदरा भरतकुमार जे.)